International Research Journal of Humanities, Language and Literature ISSN: (2394-1642)
Impact Factor 6.748 Volume 7, Issue 4, April 2020
Website-www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

चूरू जिले के भित्ति चित्रों में अन्य चित्र शैलियों का प्रभाव

डा. नरेन्द्र कुमार
सहआचार्य, चित्रकला विभाग,
राजकीय डूँगर महाविद्यालय, बीकानेर

प्रत्येक क्षेत्र की कला अपने क्षेत्र की मूल सांस्कृतिक प्रवृत्तियों एवं विशेषताओं के आधार पर विकसित होती रही है। अपने गर्भ में उन्हीं मूल प्रवृत्तियों एवं विशेषताओं द्वारा प्रसूत भावनाओं को संचित कर काल एवं समाज के उतार–चढ़ाव के साथ–साथ आगे की ओर अग्रसर होती है। यही कारण रहा है कि प्रत्येक राष्ट्र, जाति एवं समुदाय की कला में उनकी स्वयं की विशेषताएं निहित होती हैं।23 परस्पर एक–दूसरे से प्रभावित होती अवश्य हैं जिससे उनमें कुछ समानतायें भी दृष्टिगोचर होती हैं। इतना होते हुए भी उनकी स्वयं की विशिष्टताएँ उस प्रभाव से लुप्त नहीं होती हैं। चितेरों के भावमय नभ में विचरण करने की पद्धति तथा उससे प्रभावित हो जागृति हृदय की भावनाओं का रंगों के माध्यम से चित्रित करने के कौशल

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

में तकनीकी समानता–असमानता दृष्टिगोचर हो ही जाती है। इसी कारण प्रत्येक क्षेत्र की कला अपनी ही सीमा के अन्तर्गत विकसित हो प्रस्तुत होती है।

चूरू जिले के भित्ति चित्रों का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि यहाँ के भित्ति चित्र भो अन्य शैलियों बीकानेर, जोधपुर, नागौर, जयपुर, शेखावाटी, हाड़ौती, मुगल, दक्षिणी तथा कम्पनी आदि शैलियों से साम्यता रखते हैं तथा कुछ चित्रों पर इन शैलियों का प्रभाव भी लक्षित होता है। यथा आकृति विषय–वस्तु, अलंकरण, व्यक्ति चित्र, आभूषण एवं वेशभूषा, पशु–पक्षी, प्रकृति आदि। मुख्य रूप से राजस्थानी शैलियों व मुगल शैली का मिश्रित रूप देखने को मिलता है। फिर भी भित्ति चित्रों को पूर्णरूपेण किसी एक शैली में नहीं बांधा जा सकता, क्योंकि स्थानीय कलाकारों की अपनी अनुभूतियां एवं लोकतत्त्व तथा लोक–शैली भो इनमें समाहित होती है।

चूरू जिले के भित्ति चित्रों की परम्परा, प्रारम्भ होने के साथ–साथ राजस्थानी शैली की अन्य उपशैलियाँ एक निर्णायक रूप ले चुकी थी, जिनमें प्रमुख रूप से ढूंढार, मेवाड़ और मारवाड़ शैली अपनी उत्कृष्टता पर रही। यही मारवाड़ क्षेत्र जिसे वर्तमान समय में जोधपुर कहा जाता है, के शासक राव जोधा के पुत्र बीका के नाम से उसके काका कांधल ने बीकानेर बसाकर अपनी राठौड़ वंश परम्परा, सत्ता–संस्कृति दोनों का विकास व विस्तार किया।

वर्तमान चूरु जिला भी राठौड़ शासकों के बीकानेर बसाने के पश्चात् बीकानेर का मुख्य भाग व व्यापारिक केन्द्र रहा, जिससे यहाँ पर भी आर्थिक, धार्मिक कला एवं संस्कृति आदि अथाह रूप से पुष्पित एवं पल्लवित हुई, जिससे तत्कालीन मारवाड़ शैली का चूरू की भित्ति चित्र शैली पर पर्याप्त प्रभाव पड़ा। तत्पश्चात् बीकानेर रियासत भी उन रियासतों में से एक रही है जिसका मुगल दरबार के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध रहा, जिससे बीकानेर शासकों द्वारा कुछ मुगल चित्रकारों को 17वीं शताब्दी के अर्द्धभाग में बीकानेर दरबार में आश्रय एवं प्रश्रय दिया गया। इससे मुगल और दक्षिणी शैलियों का प्रभाव मुख्य रूप से परिलक्षित हुआ। यहाँ के मुगल चित्रकारों में उस्ताद अलीरजा देहली को 1650 के आस–पास राजा करणसिंह, बीकानेर ने नियुक्त किया। इनके अतिरिक्त रुकनूद्दीन तथा उसका पुत्र सहाऊद्दीन, रहीम, नाथू, शाह मुहम्मद और मुराद आदि उल्लेखनीय कलाकार रहे हैं, जिन्होंने लघु चित्रण के साथ–साथ

© **Associated Asia Research Foundation (AARF)**

बीकानेर व राजदरबार, लालगढ़, राजप्रासाद एवं अन्य छतरियों आदि पर भित्ति चित्रों को चित्रित किया, जिनके उत्कृष्ट नमूने आज भी उपलब्ध होते हैं।

इतना होने पर भी बीकानेर के शासकों ने स्थानीय राजपूत शैली को ही अधिक प्रमुखता प्रदान की, जिसमें हिन्दू देवी–देवताओं, धार्मिक विषयों तथा राजस्थानी पहनावा आदि को ही जारी रखा व केवल प्राकृतिक पृष्ठभूमि व अलंकरण को मुगलों से अपनाया। बीकानेर की इसी भित्ति चित्रण परम्परा व शैली को चूरू के ठाकुरों, जमीदारों एवं मुख्य रूप से सेठ साहूकारों, श्रेष्ठियों आदि ने अपना कर उसका अनुसरण करवाया, जिसमें सम्पूर्ण चूरू व इसके क्षेत्र आर्थिक उन्नत्ति के साथ–साथ भित्ति चित्रों की कला धरोहर से भी सम्पन्न हो गये और ज्यों–ज्यों चूरू के क्षेत्र का विस्तार होता गया वैसे–वैसे ही उन क्षेत्रों के समीपस्थ क्षेत्रों का प्रभाव भी चूरू जिले के भित्ति चित्रों में आने लगा जिनमें बीकानेर, नागौर, जोधपुर, सीकर, झुंझुनूं, हरियाणा आदि प्रमुख रहे ।

इनके अतिरिक्त चूरू के श्रेष्ठियों का व्यापार भारत के प्रत्येक क्षेत्र व विदेशों तक भी फैला। जिससे यहाँ के श्रेष्ठियों का अन्यत्र स्थानों पर आने–जाने से वहाँ की कला और संस्कृति का प्रभाव भी परिलक्षित हुआ, जिसमें बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, आसाम, पंजाब, जम्मू आदि स्थान प्रमुख रहे। पंजाब में सेठ श्री मिर्जामल पोद्दार महाराजा रणजीत सिंह के दरबारी खातेदार एवं मुख्य व्यापारी रहे थे जो अधिकतर महाराजा को भेंट व नजराना आदि भी चढ़ाते रहते थे। इनके अतिरिक्त चूरू के सेठ, साहूकारों का व्यापार बर्मा, चीन, श्रीलंका, नेपाल आदि देशों तक भी रहा।

मुख्यतः चूरू बीकानेर का ही प्रमुख हिस्सा होने की वजह से बीकानेर, जोधपुर व सीकर तथा जयपुर का प्रभाव यहाँ अधिक व स्पष्ट परिलक्षित हुआ जिसमें तकनीकी दृष्टि से जयपुर की आलागीला (आराइस) पद्धति का अनुसरण भी किया गया, किन्तु सामग्री एवं तकनीकी विशेषता चूरू की अपनी सविशेष रही है।

चूरू जिले के भित्ति चित्रों में बीकानेर के चित्रों की पूर्णानुकृति करने की चेष्टा की है जिसमें चित्रों के विषय राधा–कृष्ण की लीलाएं, रासलीला, शिव–पार्वती, भगवान विष्णु के विभिन्न अवतार व अन्य हिन्दू देवी–देवताओं के साथ–साथ रागमाला तथा गीत गोविन्द,

दरबारी शानोशौकत और व्यापक अलंकरण आदि प्रमुख रहे हैं। जिस प्रकार बीकानेर में अनूप महल, फूल महल की साज सज्जा तथा चन्द्र महल और सुजान महल की छतों, दरवाजों पर देखने को मिलती है वैसे ही चित्रण की वेशभूषा अलंकरण, चित्र संयोजन तथा रंग योजना चूरू में सुराणा हवामहल, पोद्दारों की हवेली तथा बजरंग लाल मंत्री का रंग चौबारा, बाघलों की हवेली आदि में देखने को मिलता है। जिस प्रकार बीकानेर में जूनागढ़ महल में छत पर अलंकरण युक्त मेहराबों में कृष्ण व गोपियाँ चित्रित की गई हैं। जिनकी वेशभूषा तथा नारी चित्रण की मुखाकृतियों एवं घाघरों का घेर एवं उनमें व्याप्त धारियाँ आदि चूरू जिले के भित्ति चित्रों में भी कई स्थानों पर उसी प्रकार की चित्रित की गई है।

इसी प्रकार कृष्ण की वेशभूषा एवं उनकी शरीराकृति में गहरा श्याम रंग भरा गया है, उसी प्रकार चूरू में सुराणा हवामहल में रासलीला, गौवर्धन धारण आदि चित्रों में यह रंग भरा गया है। इसके अतिरिक्त बीकानेर के बादल महल में चित्रित महाराजा सरदार सिंह एवं अन्य राजपुरुषों के चित्र में महाराजा की दादी एवं मूळे चूरू में भी सुराणा हवामहल में कांच पर चित्रित चित्रों तथा शुभकरण दासानी की हवेली सुजानगढ़ में हवेली की ऊपरी मंजिल में चित्रित चित्र दरबारी नृत्य में है, जिसमें पुरुषों की भरी हुई गलमुच्छें व दाढ़ी चित्रित की गई है।

इसके अतिरिक्त बादल महल में चित्रित बादलों को नीले और सफेद रंग की प्रवाहयुक्त सर्पाकार रेखाओं द्वारा बादल एवं उनके बीच चमकती हुई बिजली को दिखाया गया है। उसी प्रकार चूरू में चेजारों ने भी कहीं–कहीं इस प्रकार की सर्पाकार रेखाओं द्वारा उक्त प्रभाव दर्शाने की चेष्टा की है।

इसके अतिरिक्त बीकानेर के चित्रों में व्याप्त नारी–पुरुष, जिनमें सामान्य राजा–रानी, सन्त पुरुषों आदि के वस्त्रों की व उनकी मुखाकृतियों की तथा हाथ–पैरों की बनावट भाव भंगिमा आदि में चूरू के भित्ति चित्र अनेक स्थानों पर साम्यता रखते हैं, जिसमें बीकानेर शैली में चित्रित सन्त पुरुष की मानवाकृति व उसकी वेशभूषा आदि चूरू में सुराना हवामहल तथा टकणेतों की छतरी आदि स्थानों की सन्त पुरुष आकृतियों से मिलती जुलती है। इसी प्रकार बीकानेर शैली में बारहमासा का जेष्ठ माह नामक चित्र की नायिका व नायक का जामा तथा

नायिका के वस्त्र चूनड़ी, घाघरा आदि में घाघरे की धारियाँ दर्शायी गई है। उसी प्रकार के घाघरे का घेर व उसकी धारियाँ चूरू में भालेरी ग्राम स्थित स्वामी मन्दिर में चित्रित चित्रों की नारी आकृतियों में चित्रण किया गया है। और पुरुष के जामे व पारदर्शिता तारानगर में सतीमाता की छतरी में चित्रित राजपुरुषों से मिलती–जुलती है।

इसके अतिरिक्त जिस प्रकार बीकानेर के चित्रों में वस्तु परिप्रेक्ष्य का ध्यान रखा गया है। जिसमें पास की वस्तु बड़ी व दूर की छोटी दिखाई गई है। उसी प्रकार चूरू के भित्ति चित्रों में भी संयोजनात्मक सिद्धान्त की इस विशेषता का पूरा ध्यान रखा गया है। इसके अतिरिक्त जिस प्रकार बीकानेर शैली में पशुओं में ऊँट, घोड़ों तथा रंगों में पीले व लाल रंग की अधिकता है। वैसे ही चूरू के भित्ति चित्रों में भी अधिकांश स्थानों पर लाल व पीला रंग अधिक प्रयुक्त है तथा पशुओं में ऊँटों व घोड़ी का बहुलता से चित्रण किया गया है।

जोधपुर

जाधपुर दरबार में भी 17वीं शती के पूर्वार्द्ध से 19वीं शताब्दी तक निरन्तर चित्रण कार्य होता रहा है यहाँ के कलाप्रिय एवं जुझारू शासकों ने महलों में अनेक भित्ति चित्र एवं विभिन्न धार्मिक पुस्तकों के अतिरिक्त रागमाला, नाथ पंथ से सम्बन्धित व्यक्ति चित्र, लोक नायकों के चित्र अंकित करवाये। कृष्ण भक्ति शाखा में महाराजा मानसिंह के कलाप्रेम ने कला के विकास में महती योगदान दिया तथा कालान्तर में 1850 के उपरान्त स्वस्थ मारवाड़ी परम्परा पर जयपुर का प्रभाव, छाया–प्रकाश व मुगल प्रकार के अलंकरणों के रूप में दृष्टिगत होता है। तथापि जोधपुर की शैली अपनी अलग पहचान बनाने में सक्षम रही है। जिनमें गोलमटोल चेहरे बादाम के आकार की आँखें लम्बी सुती हुई नाक, गठीला शरीर, लम्बा कद छोटी–छोटी पुतलियाँ, पीछे जाता हुआ ढलवां ललाट, बड़ी पगड़ी, लम्बे जामे तथा हृष्ट–पुष्ट मोटी लम्बी मानवाकृतियों की लम्बी कलमें व मूठे जोधपुरी कलम की मुख्य विशेषताएं रही हैं।

इसी प्रकार नारी चित्रण में यहाँ की नारी का अन्तरू संवेदना का शृंगारात्मक चित्रण है जिसमें प्रेमी की प्रतीक्षा, याद, अकेलापन, आशा, निराशा, मिलन, सहेलियों के मध्य चिरमौन तथा गोल चेहरे जिन पर सर्पाकार बालों की अलकावली ऊँचा माथा, आभूषणों से सज्जित व खंजनाक्ष अंकित किया गया है। आभूषणों एवं वेषभूषा में घेर–घुमावदार गोटा लप्पी के घाघर,

© **Associated Asia Research Foundation (AARF)**

ओढ़णी और कांचली–चोली में दिखाया गया है तथा पशु–पक्षियों, हाथियों के चित्रण में जोधपुर में आगे के एक पैर को अन्दर की तरफ उठाई हुई मुद्रा में अधिकांशतरू चित्रित किया गया है।

इसी प्रकार चूरू के भित्ति चित्रों में भी पुरुष आकृतियों में हृष्ट पुष्टता, लम्बी पगड़ी, लम्बे जामे, शेरवानी, चूड़ीदार पायजामा, अंगरखा, लम्बी नाक, गठीले शरीर पर लम्बी कलम व दाढ़ी–मूछों में जोधपुरी प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है। इसी प्रकार नारी आकृतियों में भी घेर घुमावदार घाघरा, ओढ़नी और कांचली, चोली तथा विभिन्न प्रकार के आभूषणों से युक्त चित्रित है, तथा नारी के मुख पर सर्पाकार बालों की अलकावली भी चूरू के भित्ति चित्रों में नारी के मुख पर अनेक स्थानों पर चित्रित की गई है।

इनके अतिरिक्त जिस प्रकार जोधपुर में हाथी के अंकन में एक पैर उठाकर चित्रित किया गया है। रंगों में जोधपुर के चित्रों में पीले एवं गहरे लाल रंग की अधिकता है वैसे ही चूरू के चित्रों में भी यह रंग अधिक दिखाई देता है।

इनके अतिरिक्त जोधपुर अथवा मारवाड़ी शैली का प्रमुख चित्र है। श्ढोला–मारूश्च जिसके पीछे भी जोधपुरी शैली की एक अलग पहचान बनी हुई है। उसी प्रकार चूरू जिले के भित्ति चित्रों में भी ढोला और मारू के प्रेमाख्यान का चित्रण बहुलता से उसी मुद्रा में किया गया है, जिसमे प्रमुख रूप से सुराणा हवामहल चूरू, कन्हैयालाल बाधला की हवेली चूरू, भालेरी का स्वामी मन्दिर, रतननगर, कहर, सुजानगढ़ आदि स्थानों पर व्यापक रूप से देखने को मिलता है।

नागौर

राठौड़ शासकों का शक्ति केन्द्र नागौर भी रहा है। जहाँ के दुर्ग में बादल महल, शीशमहल तथा हवामहल की भित्तियों पर अनेक सुन्दर चित्र उपलब्ध होते हैं। 1724–52 ईस्वी में महाराज बख्तसिंह के समय में ढोलामारू, पासवानों, गायिकाओं, नर्तकियों सम्बन्धी शृंगारिक विषयों का अंकन किया गया था।

नागौर शैली में विशेष रूप से नारी आकृतियां अपनी देह यष्टि एवं भंगिमा के द्वारा चित्रों में विशेष आकर्षण उत्पन्न करती हैं जिनमें जनाना ढ्योढ़ी, रनिवास में अंगड़ाई लेती हुई

© **Associated Asia Research Foundation (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

महिला एवं एक तरफ दो दरबारी महिलाएं आपस में गले मिलते हुये चित्रित हैं। इस प्रकार दूसरे चित्र में जाम पेश करते हुये एवं प्रेम आलिंगन में व्यस्त 156 दरबारी महिलाओं का चित्रण है, इनमें यहां की नारी का चित्रण एवं उसकी भाव भंगिमाएं प्रदर्शित की गई हैं। इसी प्रकार चूरू के भित्ति चित्रों में नागौर का प्रभाव विषयगत एवं नारी व पुरुष की मानवाकृतियों तथा वेशभूषा आदि में परिलक्षित होता है। उपरोक्त चित्रों की वेशभूषा जैसी है, उसी प्रकार की वेशभूषा चूरू में टणकेतों की छतरी तथा भालेरी के स्वामियों के मन्दिर के चित्रों में चित्रित की गई है। जिनमें नारी आकृतियों में गोल मुख पर खंजन के समान आँखें तथा कानों के पास में लटकती हुई बालों की लट, जो कि मारवाड़ शैली की प्रमुख विशेषताओं में से है तथा स्त्रियों का घाघरा, जामा, चूड़ीदार पाजामा तथा घाघरे का पैर व उसमें व्याप्त आड़ी व लम्बी रेखाएं सलवट आदि चूरू के भित्ति चित्रों में भी परिलक्षित होती है। इनके अतिरिक्त नागौर शैली में ही चित्रित एक लघुचित्र जिसमें राजा एवं रानियां बैठी हुई है जबकि दो खड़ी हुई हैं आर छोटे राजकुमार भी बैठे हैं इस चित्र की नारी आकृतियों में वेशभूषा तथा गोल चेहरे खंजन के समान आँखें भी चूरू के टकणेतों की छतरी, भालेरी, स्वामियों के मन्दिर आदि स्थानों की नारी एवं पुरुष आकृतियों से मिलती जुलती है।

सीकर व झुंझुनू (शेखावाटी)

चूरू जिले के समीपवर्ती क्षेत्र शेखावाटी में भी चूरू जिले के समकालीन भित्ति चित्रों की परम्परा रही है तथा यहां के सेठों–साहूकारों का चूरू के श्रेष्ठियों आदि से सम्बन्ध व सम्पर्क भी रहा है जिससे एक–दूसरे की संस्कृति व भित्ति चित्रों का आपस में समन्वय भी हुआ। इसके अतिरिक्त शेखावटी से ही कई चितेरे चूरू में भी जाकर बस गये थे जिनमें स्थानीय कलाकार बाल चन्द (लक्ष्मणगढ़) प्रमुख थे। जिनके वंशज अब भी चूरू में रहते हैं। कई चितेरे केवल अपनी रोजी–रोटी व कला–साधना के लिये ही आते थे, जिनमें टकणेतों की छतरी चूरू में खण्डेला के सुखा कुम्हार द्वारा चित्रण कार्य किया गया है।

लक्ष्मणगढ़ के बाल चन्द चितेरे द्वारा चूरू में अनेक स्थानों पर चित्रण कार्य किया गया हैं, जिनमें बेदों की हवेली, गोयनकों की हवेली, पोद्दारों की हवेली तथा हजारोमल सरदारमल कोठारी की हवेली, ओसवालों का बास आदि प्रमुख हैं।

इनके अतिरिक्त चूरू के चित्रों में भी शेखावाटी जैसी लोक शैली धार्मिक, ऐतिहासिक, जनजीवन, अलंकरण, मानवाकृतियां, वेशभूषा, पशु–पक्षी आदि के चित्रों की समानता परिलक्षित होती है। जिसमें चूरू, रतनगढ़ में सीताराम थर्ड की हवेली पर चित्रित रागमाला चित्रों का विषय, उसकी मानवाकृतियों की वेशभूषा तथा रंग संयोजन जिसमें जिस प्रकार का नीला रंग मेहराब आदि चित्रित किये गये हैं उसी प्रकार का चित्रण सीकर के फतेहपुर में श्री द्वारका प्रसाद की हवेली के मुख्य द्वार पर चित्रित किया गया है।

इसके अतिरिक्त सीकर में ही ग्राम कासली में स्थित छतरीके चित्र तथा चिड़ावा में मनोहर वैद्य की हवेली पर चित्रित कुर्सी पर बैठे हुए सेठजी के जैसा चित्रण, जिसमें सेठजी की पगड़ी, कोट, धोती तथा हाथ में छाता व दूसरे में फूल लिए हुए सेठजी की पगड़ी व उनकी ऊपर की तरफ उठी हुई मूंछें व चेहरे की बनावट आदि चूरू में सरदार शहर, रतननगर तथा तारानगर में पूरणमल दुग्गड़ की हवेली, बाबू लालचन्द की हवेली पर चित्रित सेठों के चित्रों से मिलता–जुलता है। इसके अतिरिक्त सीकर के कासली गांव की छतरी के चित्र चूरू के सरदारशहर में सुमेरचन्द जयचन्द पींचा की हवेली पर चित्रित जनजीवन की झाँकियों के चित्रों से साम्यता लिये प्रतीत होता है तथा इस प्रकार के जनजीवन की झांकियां रतनगढ़, चूरू, सुजानगढ़ आदि क्षेत्रों के चित्रों में भी देखने को मिलती है। शेखावाटी के चित्रों में भी मुख्य रूप से जयपुर–मारवाड़ व मुगल प्रभाव ही अधिक परिलक्षित हुआ है।

जयपुर–ढूंढाड़

जयपुर शैली का प्रभाव चूरू के भित्ति चित्रों पर प्रत्यक्ष रूप से न पड़कर बल्कि जयपुर से सीकर व सीकर से चूरू में परिलक्षित हुआ है।

जयपुर क चित्रों में मानवाकृतियाँ प्रायः मध्यकद, ऊंचे ललाट, गोल नाक, मोटे कुछ खुले अधर, गोल चेहरे पर भारी चिबुक एवं मीनाक्ष युक्त है। नारी आकृतियाँ अत्यधिक मोटे मोती जड़ित आभूषणों से युक्त वक्ष तक आती घुंघराली लटें एवं मुगल वेशभूषा होने के कारण कभी–कभी मुगल अथवा दक्षिणी शैली का भ्रम उत्पन्न करती हैं। फिर भी जयपुर शैली अपनी उत्कृष्टता एवं फ्रेस्को विधि के लिए प्रसिद्ध रही है।

चूरू में भी जयपुर शैली का प्रभाव अनेक स्थानों के चित्रों में देखने को मिलता है,

जिसमें टकणेतों की छतरी के दरबारी दृश्य तथा यति रिधकरण का उपासरा (जैन मन्दिर) में दृश्यगत होता है। जिसमें टकणेतों की छतरी के दरबारी दृश्य राजाओं व अन्य दरबारियों के जाने, पगड़ियाँ तथा मानवाकृतियाँ आदि जयपुर में अलबर्ट संग्रहालय के मुख्य द्वार के बरामदे में जयपुर के शासकों के व्यक्ति चित्रों से हूबहू मिलती–जुलती है। इसी प्रकार आदर्शनगर श्मशान घाट में भाटियों की छतरी में चित्रित दरबारी महिलाओं की आकृतियाँ, वेशभूषा, चूरू में सुजानगढ़ तहसील के सालासर में हनुमान मन्दिर में चित्रित चित्र गूजरियों से माखन लूटते हुये कृष्ण का है, जिसमें गूजरियों का ठिगना कद व उनकी वेशभूषा, घेरदार घाघरा आदि से मिलता–जुलता है।

इसके अतिरिक्त यति रिधकरण उपासर में पुनरू जीर्णोद्धार सन् 1935 में कराकर उसमें जैन धर्म से सम्बन्धित अनेक कथाओं, तीर्थंकरों तथा सतीमाता के सतीत्व का फल व बाहुल्यरूप से स्वर्ण रंग युक्त अलंकरणों का चित्रण किया गया है।यहाँ के इन सभी चित्रों में सु-ढ़ एवं भावपूर्ण मानवाकृतियों में सुन्दर, कामल व मिश्रित रंगों का प्रयोग कर उनमें छाया–प्रकाश (बारीक परदाज) दिखाया गया है जो कि लघु चित्रों की भांति इन चित्रों में परिलक्षित होते हैं। चूरू में यति रिधकरण के उपासरे के इन सभी चित्रों को जयपुर के कारीगरों द्वारा ही चित्रित किया गया था।

करौली शैली

राजस्थान की प्रमुख शैलियों में जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, कोटा, बूंदी, मेवाड़ आदि शैलियों के अतिरिक्त इन्हीं क्षेत्रों से प्रभावित हो छोटे–छोटे रजवाड़ों में भी चित्र शैलियों का उद्भव हुआ, जिनमें अलवर, उनियारा, मोजमाबाद, भरतपुर तथा करौली आदि हैं जिन्ह उपशैलियाँ भी कहा जाता है। इन्ही शैलियों में से करौली शैली रही है। यहाँ पर भी 18वीं शताब्दी के पश्चात् चित्रण कार्य हुआ है जिसमें राधा–कृष्ण एवं कृष्ण की लीलाओं के अतिरिक्त दरबारी तथा लोक चित्रों का चित्रण हुआ, जिनमें गोल चेहरे, बादाम के समान आँखा की आकृति तथा नाक होठ, ठोड़ी, हाथ–पैरों की अंगुलियां, भोंहें तथा स्त्री आकृतियों में नाक के पास से सर्प के आकार में लटकती बालों की लटें आदि जोधपुर (मारवाड़ शैली) से मिलती–जुलती है इसी प्रकार की विशेषताएं चूरू के चित्रों में भी मिलती है। इसके अतिरिक्त लोक शैली में

चित्रित स्थानीय व्यक्ति चित्र, सामाजिक जनजीवन आदि के चित्रों का चित्रण भी करौली शैली में हुआ है वैसा ही चित्रण चूरू में सुजानगढ़ तहसील के अन्तर्गत बीदासर में लिखमीचन्द टांटिया की हवेली पर देखने को मिलता है जिसमें एक व्यक्ति ने मीर को अपनी गोद में बिठा रखा है। इसी प्रकार एक अन्य चित्र रामगोपाल पोद्दार, रतननगर की हवेली पर हास्य रस से सम्बद्ध चित्र है। इसी प्रकार का चित्रण करौली के चित्रो में भी देखने को मिलता है।

मुगल शैली

जयपुर के शासकों के मुगल आधिपत्य स्वीकार करने के पश्चात् जोधपुर, बीकानेर, उदयपुर (मेवाड़) आदि स्थानों पर भी मुगलों का अधिकार हो गया था। इसका कारण औरंगजेब के कलाप्रेमी नहीं होने की वजह से वहाँ के दरबारी चित्रकार आश्रय के लिए अन्य रियासतों की तरफ पलायन करने लगे।

बीकानेर में भी मुगल चित्रकारों को आश्रय एवं प्रश्रय दिया गया जिससे यहाँ पर भी चित्रकला ने एक नया स्वरूप धारण कर लिया और कालान्तर में बीकानेर शैली के नाम से विख्यात हुई। यद्यपि यहाँ की शैली में मुगल प्रभाव चित्रों के अलंकरण, वेशभूषा, पृष्ठभूमि तथा दरबारी शानो–शौकत आदि में ही प्रमुख रहा किन्तु विषय मानव आकृतियाँ एवं वेशभ्षा स्थानीय ही रही।

बीकानेर दरबार में चित्रित चित्रों की अनुकृतियाँ तथा वहीं के मुस्लिम चित्रकारों के वंशजों द्वारा चूरू में किया गया चित्रण कार्य का आधार भी मुख्य रहा जिससे चूरू के भित्ति चित्रों में मुगल प्रभाव कई रूपों में आया। जिनमें पुरुषों में नोकदार जामा, स्त्रियों में हुक्का पीते हुये व्यक्ति चित्र तथा दरबारी महिलाएँ आदि बनाये गये मुख्यतरू मुगल बादशाह को अपने व्यक्ति चित्र बनवाने का बहुत शौक था। अकबर स्वयं भी सामने बैठकर चित्र बनवाता था, सम्भवतया इसी से प्रेरित होकर चित्रकारों ने चूरू में राजपरिवारों के व्यक्ति चित्र दरबारी चित्र तथा श्रेष्ठियों के व्यक्ति चित्र बनवाये।

पशु–पक्षियों व नारियों का आलेखन में प्रयोग करना भी मुगल कला का प्रभाव रहा है। इसी प्रकार अलंकृत कालीन फर्श (कारपेट) का चित्रण भी मुगल शैली से आया। इसके अतिरिक्त बाहुल्यरूप से विभिन्न प्रकार का अलंकरण, जिनमें ज्यामितिय गोल, मेहराबदार,

© **Associated Asia Research Foundation (AARF)**

आपस में गूंथे हुए एवं आँटीदार आदि का बाहुल्य रूप से चित्रण कर उनमें तेज एवं चटक रंगों का प्रयोग किया गया है जिसके अन्तर्गत जिस प्रकार प्रहलाद राय चौधरी, रतनगढ़ की हवेली के बाहरी सम्पूर्ण हिस्से पर विभिन्न प्रकार का ज्यामितिय, गोल चौकोर, त्रिभुजाकार तथा विभिन्न प्रकार की घुमावदार फूल पत्तियों को चित्रित किया गया है वैसा ही चित्रण पर्शिया के चित्रों में देखने को मिलता है। जो कि मुगल प्रभाव का ही घोतक है।

चूरू के रंगों में भी मुगल प्रभाव देखने को मिलता है जिनमें लाल व चटकदार नीला रंग मुगलो से पहले राजस्थानी भित्ति चित्रों में देखने को नहीं मिलता था तथा स्वर्णिम रंगों का आलेखन व वेशभूषा के प्रयोग पर भी शुद्ध मुगल प्रभाव रहा है। ये 18वीं शती में भारत के चित्रों में अधिक देखने में आया। इससे पहले भारतीय चित्रकार स्वर्णिम रंगों का प्रयोग नहीं करते थे। वेषभूषा में तंग पायजामा, झीना जामा मुगल में दिखाया गया है। स्त्रियों का दुपट्टा ओढ़े हुए भी मुगल प्रभाव का परिचायक है।

इनके अतिरिक्त चूरू में इस्लाम धर्म के प्रवर्तक मोहम्मद साहब के वाहन श्बुर्राक की घोड़ीय का भी अधिकांश हवेलियों पर चित्रण किया गया है। दूसरी ओर सम्पूर्ण चूरू में अधिकांश संख्या मुस्लिम चितेरों की ही रही है जिससे विषय में धार्मिक पौराणिक या दरबारी तथा जनजीवन सभी उक्त चित्रकारों की अपनी आन्तरिक अभिव्यक्ति भी स्पष्ट झलकती है। इस प्रकार मुगल कला का जन्म वस्तुतरू ईरानी तथा भारतीय शली के आपसी सहयोग का ही परिणाम रहा है।

मेवाड़ शैली का प्रभाव चूरू में गोवर्धन धारण चित्र में तथा रासलीला में कृष्ण की रासलीला पर पुष्पों की वर्षा करते हुए एवं 16वीं शती में मेवाड़ शैली के गीत गोविन्द में केले के पत्तों का चित्रण देखने को मिलता है। जिनका चित्रण चूरू के भित्ति चित्रों में भी किया गया है।

गोपियों के क्षितिजाकार पट्टियों बाले घाघरे का प्रचलन मालवा शैली का प्रतीक था और 1650 के आस–पास बनायी गई आमेर की रागमाला चित्र में भी पाया जाता है। दिव्य संगीतकारों की आकृतियाँ और रास नागौर किले के बादल महल में भित्ति चित्रों के रूप में अंकित है। ऐसा ही चित्रण चूरू जिले के चित्रों में भी देखने को मिलता है।

हरियाणा एवं पंजाब के भित्ति चित्रों का प्रभाव भी चूरू के चित्रों में परिलक्षित हुआ

जिसमें सरदारशहर, तारानगर, राजगढ़, हरियाणा के कुरुक्षेत्र के (कोल) करने में श्रीराम मन्दिर में चित्रित धार्मिक मत्स्य अवतार तथा रासलीला एवं पेड़ों की आकृतियाँ तारानगर में सतीमाता की छतरी से मेल खाती प्रतीत होती हैं। इसी प्रकार शीशमहल पटियाला में फ्रेस्को प्रविधि में चित्रित धार्मिक एवं कम्पनी शैली के चित्रों से भी सरदारशहर एवं चूरू के टकणेतों की छतरी आदि स्थानों के धार्मिक चित्रों में वराह अवतार एवं नरसिंह अवतार से साम्यता रखते हैं।

उड़ीसा की पौराणिक कथाओं में विष्णु कृष्ण और पुरी के जगन्नाथ एक समान और सर्वोच्य महत्त्व के माने जाते हैं। जगन्नाथपुरी में कृष्ण की अपेक्षा विष्णु की पूजा होती है जिसकी रचनात्मकता और प्राचीनता नाथद्वारा से ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। पुरी के पट्ट चित्र विष्णु और उनके विभिन्न अवतारों से सम्बन्धित हैं जिसमें विष्णु अपने कृष्ण के अवतार में एक महान प्रेमी का रूप धारण करते हैं। वे सुन्दर गोपियों के मादक रूप पर मोहित प्रतीत होते तब गोपियां स्वयं एक अश्व व हाथी के रूप में संयोजित होकर तारों भरी रात्रि में कृष्ण के साथ आनन्दपूर्ण यात्रा करती है। जिसका चित्र चूरू में रामबल्लभ गाडोदिया रतननगर की हवेली में मुख्य रूप से किया गया है। इसी प्रकार श्नारी–अश्क्य तथा श्नारी–गजत्र्य का चित्रण उडोसा के चित्रों में देखने को मिलता है।

लोक कला

लोक कला लोक मानस की कलाप्रियता एवं सृजनात्मकता का परिणाम रही है। यह पवित्र, अछूती एवं स्वच्छ होती है। इसमें तकनीकी की विभिन्नता तथा न ही कृत्रिम जीवन का चित्रण होता है। यद्यपि इसमें जनजीवन एवं परम्पराओं से प्रेरणा मिली है। इसी कारण यह कभी किसी राजदरबार या आश्रयदाता के संरक्षण में पल्लवित नहीं हुई और जनजीवन में इस प्रकार गुंथ गयी है कि इसे जीवन से पृथक करके देखने की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

चूरू जिले की भित्ति चित्रकला भी इस शैली से प्रभावित हुई, जिसमें वहाँ पर समय–समय पर विभिन्न उत्सवों, त्यौंहारों आदि पर भूमि चित्रण (मांडणा), सांझी तथा विवाह तथा पुत्र–जन्मोत्सव के समय प्रवेशद्वार के दोनों तरफ अलंकरण एवं ऊँट–घोड़े, सूर्य आदि का चित्रण किया जाता रहा है। इसके अतिरिक्त कठपुतली व मदारी का खेल, करतब आदि को

भो लोक कला के रूप में चित्रित कर तत्कालीन लोक अभिरुचियों का चूरू जिले में व्यापक चित्रण किया गया है। जिनमें सरदारशहर, रतनगढ़, तारानगर आदि प्रमुख स्थान रहे हैं।

यूरोपियन कला का प्रभाव

19वीं शती के पहुंचते–पहुंचते चूरू के चित्रकारों ने भी विदेशी प्रभाव ग्रहण करना प्रारम्भ कर दिया था, जिसका कारण फोटोग्राफी तथा कला संरक्षकों का परिवर्तित दृष्टिकोण रहा है। चूरू में बीकानेर के महाराजा गंगासिंह के शासनकाल में अंग्रेजी प्रभाव अधिक परिलक्षित हुआ।

यूरोपियन प्रभाव के परिणामस्वरूप चित्रों में यथार्थवादिता आई। परिप्रेक्ष्य तथा स्थितिजन्य लघुता का प्रयोग चित्रों में होने लगा। भवनों के आन्तरिक दृश्य में गहराई दर्शायी जाने लगी। तथा छाया–प्रकाश का प्रयोग प्रारम्भ हुआ। अंग्रेज व्यक्तियों के व्यक्ति चित्र बनने लगे तथा तैलीय रगों का भी प्रयोग प्रारम्भ किया जाने लगा। चित्रित विषयों की अनुकृतियाँ की जाने लगी। युद्ध के दृश्यों तथा अंग्रेज सैनिकों को यूरोपियन वेशभूषा में पेन्ट–कमीज, टाई, जूते–मोजे, टोप आदि लगाए चित्रित किया जाने लगा।

इनके अतिरिक्त रेलगाड़ी, मोटरगाड़ी की सवारी तथा हवाईजहाज, ग्रामोफोन व बाहुल्यरूप से दृश्य चित्रों की अनुकृतियाँ की गई, जिनमें सरदारशहर, रतनगढ़, सुजानगढ़, तारानगर, राजगढ़, श्रीडूंगरगढ़ आदि प्रमुख स्थान रहे।

इस प्रकार हमारे समक्ष चूरू जिले के भित्ति चित्रों का जो स्वरूप उभर कर सामने आया, उसका क्रमिक विकास मुख्य रूप से दो रूपों में आगे बढ़ा है। एक तो शास्त्रीय रहा है जिसमें निर्माता लघु चित्रकार थे। दूसरे रूप में भित्ति चित्रकला स्वतन्त्र होकर लोक परम्पराओं द्वारा आगे बढ़ती रही।

इन अनेक शैलियों के प्रभाव और स्वरूपों को अपने में समाहित करते हुये भी अपनी अलग विशेष पहचान बनाकर आधुनिक समय 20वीं शती के मध्य तक जारी रही तथा आज भी प्रकृति एवं भौतिकता की दौड़ में सम्मिलित मानव से त्रस्त्र हो अपना स्वरूप बनाए हुए हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. सादृश्य लिख्यते यत्तु दर्पणे प्रतिबिम्बवत्।
2. ए.पी. व्यास– राजस्थान की चित्रकला, एक मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण, पृ. 15, 16
3. कला के पद्म, पृ. 48
4. बनराज जोशी – चूरू दर्शन, पृ.48
5. गोविन्द अग्रवाल – चूरू मण्डल का शोधपूर्ण इतिहास, 298
6. ए.पी. व्यास – राजस्थान की चित्रकला, एक मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण, पृ. 15,16
7. डॉ. दिनेश कुमार एवं श्रीमती सुधा रानी चित्रवीथी, उत्तर भारतीय मध्यकालीन चित्र शैलियां, पृ. 10, 12
8. सुबोधकुमार एवं इतिहासकार गोविन्द अग्रवाल तथा बालचन्द्र के पुत्र के अनुसार।
9. इस छतरी में संवत् 1833 सुखा कुम्हार खण्डेला का चेजारा लिखा हुआ है।
10. स्थानीय पुजारी एव सुबोध अग्रवाल के कथनानुसार। कूपर इले – द पेन्टेड वाल ऑफ शेखावाटी विद स्ट्रीट मेप, पृ. 59
11. प्रसिद्ध चित्रकार श्री वेदपाल शर्मा (बन्नू जी) के अनुसार